एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

फूलों की खेती से बढ़ेगी किसानों की आमदनी

(शशांक तोमर[1], कु० वैशाली[1] एवं *ललित कुमार वर्मा[2])

[1]पुष्पोंत्पादन एवं भूदृश्य निर्माण वास्तुकला विभाग, स. व. भ. पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ (उ० प्र ०)-250110

[2]कृषि अर्थशास्त्र विभाग, जनता वैदिक कालिज, बड़ौत, बागपत (उ० प्र ०)-250611

*संवादी लेखक का ईमेल पता: verma.lalitkumar49@gmail.com

वर्तमान समय में अब यह आवश्यक हो गया है कि कृषि एवं कृषि से जुड़े व्यवसाय केवल जीवन-निर्वाह (livelihood) का साधन मात्र नहीं रह गये है। किसानों के आर्थिक उत्थान एवं आय में वृद्धि करने के लिए कृषि में विविधीकरण को अपनाना होगा। पारम्परिक फसलों की जगह मुनाफे वाली फसलें जैसे- बागवानी, मसाला फसलें, औषधि फसलें, सब्जी, फूल एवं फलों की खेती, मधुमक्खी पालन आदि का कुछ हिस्से में समावेश किया जाना जरूरी हो गया है। जिससे किसान आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होगें जो वर्तमान की माँग है।

परिचय

वैदिक काल से ही हमारे देश में अनेक सुन्दर छायादार वृक्षों पुष्पीय पौधों तथा औषधीय पौधों को देवी-देवताओं का प्रतीक मानकर पूजा होती रही है, जैसे तुलसी विष्णु का, कमल लक्ष्मी का, चम्पा सरस्वती का, कदम्ब श्री कृष्ण का, पीपल, धतुरा, अमलताश, बेल पत्र शिव आदि के प्रतीक है। हमारे देश के प्राचीन ग्रन्थों 'रामायण' 'गीता', 'शकुन्तला' आदि में अलंकृत पौधों का काफी विवरण देखने को मिलता है। इन ग्रंथों के अध्ययन में यह बात एकदम स्पष्ट होती है कि हमारे पूर्वजों को भी शोभाकारी पेड़-पौधों से बहुत लगाव था।

हाल ही में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) की 92वीं सालाना आम बैठक में भी फूलों की खेती को बढ़वा देने पर चर्चा हुई। जिसमे केंद्रीय खाद्यमंत्री श्री पीयूष गोयल जी ने कहा कि बागवानी और फूलों की खेती से किसानों की आमदनी में बढ़ोत्तरी की जा सकती है। फूलों की खेती से प्रति इकाई भूमि पर शुद्ध लाभ खेती वाली अन्य फसलों की तुलना में 10 से 20 गुना आधिक होता है। एक अनुमान के मुताबिक गेंदे के फूल की खेती में प्रति एकड़ 30,000 रुपये का खर्च आता है, जबकि एक एकड़ में गेंदे के फूल की खेती कर किसान आराम से 2 से 3 लाख रुपये तक का मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। फूलों के व्यावसायिक उत्पादन तथा फूलों एवं इनके मूल्य संवर्धित उत्पादों के निर्यात क्षेत्र में तकरीबन भारत ने 2021-22 में लगभग 770 करोड़ रुपये की करीब 23,597 टन फूलों की खेती से संबंधित वस्तुओं का निर्यात किया है। इसके निर्यात गंतव्यों में अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ब्रिटेन, यूएई तथा सबसे महत्त्वपूर्ण नीदरलैंड, जो दुनिया का सबसे बड़ा फूल बाजार और अंतरराष्ट्रीय व्यापार का नीलामी केंद्र है, जैसे विकसित देश शामिल हैं।

विकसित होते इस क्षेत्र की उपज में विभिन्न प्रकार के उत्पाद शामिल हैं, जैसे फूल (माला और सजावट के लिए), तना युक्त फूल (कट फ्लॉवर - गुलदस्ते बनाने के लिए), गमले वाले पौधे, बेलबूटे,

कलियां, कंद, जड़ युक्त और सूखे या निर्जलित फूल तथा सजावटी पत्तियां। खेती वाले फूलों का दायरा, जो शुरुआत में मुख्य रूप से गुलाब, गेंदा, ऐस्टर, ग्लेडियोलस, गुलदाउदी आदि तक ही सीमित था, लेकिन अब धीरे-धीरे इस क्षेत्र में भी वृद्धि हो रही है, जिसमें गुलनार, जरबेरा, जिप्सोफिला, लिआट्रिस, नेरिन, आर्चिया, एन्थुरियम, ट्यूलिप, लिली तथा कई तरह के ऑर्किड शामिल हैं।

फूलों से मूल्य वर्धित उत्पाद बनाकर जैसे सुगन्धिन तेल व इत्र के रूप में बेचकर किसानों को ना इनसे केवल आमदनी में वृद्धि होगी, बल्कि स्वरोजगार के अवसर भी विकसित होगें। किसान फूलों की खेती करने के साथ-साथ इनकी नर्सरी लगाकर भी अच्छा पैसा कमा सकते हैं, क्योंकि फूलों के पौधे घरों में लगाने का चलन इन दिनों तेजी से बढ़ रहा है।

फूलों के प्रकार

अलंकृत बागवानी में सजावट तथा सौंदर्य के लिए एकवर्षीय एवं बहुवर्षीय पौधों को, शीशे के घरों में, गमलों में, टोकरियों में एवं भवनों आदि में पौधे उगाए जाते हैं। एकवर्षीय पौधे, जो 3 माह से लेकर एक साल तक में अपना जीवन चक्र पूरा कर लेते हैं। जैसे- गेंदा, ग्लेडियोलस, गुलदाउदी, डेहलिया, जिन्निया, पेटूनिया, बिगोनिया, कॉसमॉस, स्नैपड्रैगन आदि। बहुवर्षीय पौधे, जो एक वर्ष से आधिक के समय में अपना जीवन चक्र पूरा कर लेते हैं। जैसे- गुलाब, चमेली, मोगरा, चांदनी, रजनीगंधा, आर्किड, गुड़हल, सदाबहार, बोगनविलिया, गैलार्डिया, कुमुदिनी, लिली, ऐस्टर तथा जर्बेरा आदि शामिल हैं। इन फूलों को किसान कम लागत में आसानी से उगा सकते हैं और ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमा सकते हैं।

शीतकालीन फूल के पौधों की बुआई

शीतकाल में लगाए जाने वाले पौधों के बीजों की बुआई सितंबर-अक्टूबर माह में नर्सरी या ट्रे में की जाती है। ये पौधे नर्सरी में 6 सप्ताह में तैयार हो जाते हैं। इन तैयार पौधों को मध्य अक्टूबर से नवंबर तक क्यारियों या गमलों में लगाया जा सकता है। इन पौधों पर जनवरी से मार्च के बीच फूल आने लग जाते हैं। शीतकालीन मौसम में गेंदा, गुलाब, ग्लेडियोलस, डहेलिया, गुलदाउदी, चमेली, मोगरा, चांदनी, आदि फूलों को उगाकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते है।

चित्र-1: शीतकालीन गेंदा के खिलखिलाते फूल

ग्रीष्मकालीन फूल के पौधों की बुआई

ग्रीष्मकाल में लगाए जाने वाले पौधों के बीजों की बुआई मार्च-अप्रैल माह में नर्सरी या ट्रे में की जाती है। ये पौधे नर्सरी में 6 सप्ताह में तैयार हो जाते हैं। इन तैयार पौधों को मई से जून तक क्यारियों या गमलों में लगाया जा सकता है। इन पौधों पर जुलाई -अगस्त के बीच फूल आने लग जाते हैं। ग्रीष्मकालीन

मौसम में बौने गैंदा (फ्रेंच मेरीगोल्ड), रजनीगंधा, गुड़हल, रातरानी, बिगोनिया, बोगनविलिया, डैसी, लिली तथा जर्बेरा आदि फूलों को उगाकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते है।

पौधे लगाने के प्रकार

- **क्यारियों में लगाए जाने वाले पौधे :** गेंदा, गुलाब, ग्लेडियोलस, डहेलिया, गुलदाउदी, चाइना स्टर, वरबीना, स्वीट विलियम नस्टरसियम, फ्लॉक्स, सालबिया, पैंजी, केलंडुला, ओरनामेंटर पॉपी, लाइनम, हालीऑक, कोर्न फ्लॉवर, एक्रोक्लाइनम।
- **गमलों में लगाए जाने वाले पौधे :** गेंदा, गुलाब, पैंजी, फ्लॉक्स, पिटुनिया, केलंडुला, गुलदाउदी, वरबीना, केंडीडफ्ट, स्टॉक, एंटीराइजम, डायंथम, डहेलिया, बौने गैंदा, जिमेशिया आदि।
- **लटकने वाली टोकरियों के लिए :** आर्किड, स्वीट एलाइसम, नस्टरसियम, वरबीना, पिटुजिया, पोर्टुलाका।
- **भूमि को कवर करने के लिए :** स्वीट एलाइसम, वरबीना, पैंजी, पोर्टूलाका आदि।

चित्र-2: रंग-बिरंगे खिलखिलाते गुलाब के फूल

भूमि तथा मिट्टी की तैयारी

फूलों वाले पौधों की रोपाई या बुआई से पूर्व भूमि की भली-भांति जुताई करनी चाहिए। जुताई के बाद 7 से 10 दिनों तक खुला छोड़ दें। इस दौरान बनाई क्यारियों में अच्छी सड़ी गोबर की खाद 3 से 4 किलो प्रति वर्गमीटर की दर से डाल दें। अगर वर्मी कंपोस्ट उपलब्ध हो तो 2 किलो पर्याप्त होगी। गमले का उपयोग करना है तो गमलों में भरने वाली मिट्टी में एक तिहाई गोबर की खाद डालनी चाहिए। निर्धारित समय पर पौधरोपण के बाद उसकी सिंचाई करनी चाहिए। लगभग 7 दिन बाद निराई-गुड़ाई के दौरान अगर कोई खरपतवार हो तो उसे निकाल देना चाहिए।

खाद एवं उर्वरकों की संस्तुति

आमतौर से फूलों की खेती के लिए आधिक मात्रा में खाद एवं उर्वरकों की आवश्यकता नहीं होती है। प्राय: निराई गुड़ाई के बाद यूरिया, सिंगल सुपर फास्फेट, म्यूरेट ऑफ पोटाश 1:2:1 के अनुपात में मिश्रण बनाकर 10 ग्राम प्रति वर्गमीटर के हिसाब से भूमि में मिलाना चाहिए। उत्तम क्वालिटी के फूलों के उत्पादन के लिए 10 लीटर पानी में एक किलो सरसों, नीम या अरंडी की खली मिलाकर 10 दिनों तक एक ड्रम में

भरकर रख लें। तत्पश्चात इसे पानी मिलाकर चाय के रंग जैसा मिश्रण बना लेना चाहिए। इस तरल मिश्रण को आधा लीटर प्रति वर्गमीटर की दर से 15 दिन के अंतराल में 2-3 बार पौधों पर छिड़काव करना चाहिए।

फूलों की तुड़ाई तथा तुड़ाई उपरांत देखभाल

आमतौर से फूलों की तुड़ाई सुबह के समय करनी चाहिए जिससे फूलों में ताजगी बनी रहती है। बाजार की स्थिति एवं फूलों की परिपक्वता के अनुसार फूलों की तुड़ाई की जानी चाहिए। स्थानीय बाजार की उपलब्धता होने पर फूलों की तुड़ाई कुछ हद तक परिपक्व होने पर की जा सकती है। परंतु बाजार दूर होने की स्थिति में फूलों को खिलने की प्रारंभिक अवस्था में ही तोड़ लेना उत्तम होता है।

फूलों की तुड़ाई के बाद उनकी सेल्फ-लाइफ (ताजगी) को अच्छी तरह से बनाए रखने के लिए बिभिन्न प्रकार की विधियों का प्रयोग जाता है, जिनमें Pulsing मुख्य विधि है। Pulsing विधि में फूलों के डंठल को 0.6 एमएम सिल्वर थायोसल्फेट (STS) प्लस 25 ग्राम सुक्रोज या 8% इथेनॉल प्लस के घोल में डूबाकर 10-15 मिनट तक रखा जाता है।

श्रेणीकरण (ग्रेडिंग): फूलों की ग्रेडिंग करने से किसानों को अच्छा मूल्य मिलता है। फूलों की ग्रेडिंग स्पाइक्स को डंठल की लंबाई, रेचिस की लंबाई, प्रति स्पाइक फूलों की संख्या और स्पाइक्स के वजन के अनुसार वर्गीकृत किया जाना चाहिए। तथा लूस फूलों को आकार एवं रंगों अनुसार वर्गीकृत किया जाना चाहिए।

फूलों, मसालों व फलों की खेती के लिए मिलता है अनुदान

किसानों की आय बढ़ाने के लिए केंद्र व राज्य सरकारों की ओर से काफी प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं चलायी जा रही हैं ताकि किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार के साथ उनकी आमदनी बढ़ सके। इन्ही योजनाओं में राष्ट्रीय बागवानी मिशन एक प्रमुख योजना है जिसके तहत किसानों को फल, सब्जी और फूलों की खेती के लिए सरकार की ओर से अलग-अलग कार्य हेतु अलग-अलग सब्सिडी दिए जाने का प्रावधान है। इस योजना में किसान को 50 -90 प्रतिशत तक अनुदान या सब्सिडी दी जाती है। इस स्कीम के माध्यम से स्ट्रॉबेरी, ड्रैगन फ्रूट, मसाले व सुगंधित पौधे की खेती करने पर 50 प्रतिशत अनुदान, गेंदे के फूल की खेती के लिए 70 प्रतिशत, पपीता की खेती करने पर कुल लागत का 75 प्रतिशत अनुदान, मिर्च की खेती के लिए 50 प्रतिशत अनुदान, तथा सब्जी व फल सुरक्षित रखने के लिए प्लास्टिक करैट, लेनी वैग व मशरूम किट लेने पर 90 प्रतिशत तक का अनुदान या सब्सिडी दी जाती है।

निष्कर्ष

फूलों की खेती किसानों के लिए आमदनी का अच्छा स्रोत है जिससे कम समय तथा कम लागत में अधिक मुनाफा प्राप्त कर सकते है। फूलों की खेती से ना केवल किसानों की आमदनी में वृद्धि होगी, बल्कि स्वरोजगार तथा हजारों लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी विकसित होगें।